भारत की अवस्थिति का महत्व हिन्द महासागर के विशेष सन्दर्भ में
(Locational Significance of India in Context of Indian Ocean)

डॉ0 कमलेश कुमार
प्राध्यापक, भूगोल विभाग
आचार्य बलदेव कालेज, कोपा, पतरही, जौनपुर

भारत की भौगोलिक स्थिति में हिन्द महासागर का विशेष महत्व है। चूँकि भारत तीन ओर उत्तर–पश्चिम, उत्तर एवं पूर्व में पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ है, अतः व्यापारिक मार्ग हेतु सागर का मार्ग ही सुगम है। ओ0 एच0 के स्पेट के अनुसार ''भारत हिन्द महासागर रूपी मेहराब का आधार प्रस्तर है।'' भारत का प्रायद्वीपीय भाग हिन्द महासागर के अन्दर तक फैला हुआ है, जिससे इसकी सागर तटीय उपयोगिता में और वृद्धि हो जाती है। सदियों से भारत के लोग हिन्द महासागर का उपयोग परिवहन व मत्स्य उत्पादन हेतु करते आये है। आज तकनीकी विकास के साथ–साथ हिन्द महासागर की उपयोगिता भारत हेतु बढ़ती जा रही है। सामरिक, आर्थिक, सुरक्षात्मक आदि अनेक दृष्टियों से हिन्द महासागर भारत के लिए महत्वपूर्ण है। विश्व के महासागरों में केवल हिन्द महासागर ही ऐसा महासागर है जिसका नामकरण इसके मस्तक पर विराजमान 'हिन्द' देश (भारत) के नाम पर पड़ा है। इससे भारत के ऐतिहासिक महत्व की अभिव्यक्ति होती है। हिन्द महासागर के तटवर्ती संलग्न राष्ट्र मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, मेसोपोटामिया जैसी प्राचीनतम् सभ्यताओं के केन्द्र बिन्दु रहे हैं। इस महासागर ने अपनी छाती पर सदियों तटवर्ती संलग्न राष्ट्रों के निवासियों को ढोया है। अपने गर्भ से अमूल्य भौतिक तथा जैविक संसाधनों से उनका पालन पोषण किया है। स्पाइकमैन (1893–1943) के 'परिमास्थल' (Rimland) परिकल्पना की दृष्टि से भारत की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्पाइकमैन द्वारा प्रतिपादित परिमास्थल का प्रमुख अंग है और इस क्षेत्र में इसकी स्थिति पूर्व–पश्चिम विस्तार की दृष्टि से मध्यवर्ती है। स्पाइकमैन ने स्थल शक्ति के विकास में सामूहिक सभ्यता के आधारभूत तत्व को स्वीकार किया था। इस दृष्टि से भारत लम्बी तटरेखा युक्त व हिन्द महासागर के किनारें स्थित होने के कारण स्थल शक्ति के विकास में अग्रणी राज्य बन सकता है।

हिन्द महासागर की भौगोलिक स्थिति :–

भूमण्डल के सन्दर्भ में अटलाण्टिक और प्रशान्त महासागरों के बीच स्थित हिन्दमहासागर वास्तव में एक खाड़ी महासागर है, क्योंकि पूर्वी गोलार्द्ध में एशिया, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया से घिरा यह महासागर खाड़ी सदृश है। इसका केवल दक्षिणी भाग खुला है। दक्षिणी ध्रुव पर विस्तृत अण्टार्कटिका महाद्वीप ही इसकी दक्षिणी सीमा बनाता है। क्षेत्रीय विस्तार के आधार पर यह 20° पूर्वी देशान्तर से लेकर 146°53′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। हिन्द महासागर की उत्तरी सीमा पश्चिम में दक्षिण अफ्रीका से प्रारम्भ होकर पूर्व में तस्मानिया तक विस्तृत कई तटवर्ती राष्ट्र बनाते है। उत्तरी सीमा भूभाग से घिरी होने के कारण इसके भौतिक सामुद्रिक, संरचना तथा समुद्री संचरण में उत्तर दक्षिण दिशा में समरूपता नहीं है। हिन्द महासागर की पश्चिमी सीमा 20° पूर्वी देशान्तर है जो इसे अटलाण्टिक महासागर से अलग करता है। अन्तर्राष्ट्रीय हाइड्रोग्रैफिक ब्यूरो ने केप अगुलहास (20° पूर्व देशान्तर से दक्षिण, अण्टार्कटिका के क्वीन माडलैण्ड पूर्व में प्रिंसेस रेनहील्ड तट तथा पश्चिम में प्रिंसेस एस्ट्रिड तट की सीमा) से होकर जाने वाले 20° देशान्तर को हिन्द महासागर की पश्चिमी सीमा तथा आस्ट्रेलिया के दक्षिण बास जलडमरूमध्य के पश्चिमी छोर से किंगद्वीप होते हुए उत्तरी पश्चिमी तस्मानिया के केप ग्रिम तथा तस्मानिया के दक्षिणी पूर्वी केप से (146° 53′ पूर्वी देशान्तर) दक्षिण, अण्टार्कटिका की फिशर खाड़ी में स्थित जार्ज पंचम तट तक हिन्द महासागर की पूर्वी सीमा निर्धारित किया गया है। परन्तु आस्ट्रेलिया के उत्तर में हिन्द महासागर की पूर्वी सीमा पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय हाइड्रोग्रैफिक ब्यूरों ने आस्ट्रेलिया के सबसे उत्तरी छोर केप यार्क (11°05′ दक्षिणी, 142°03′ पूर्वी) के संकीर्ण टार्स जलडमरूमध्य जो आस्ट्रेलिया को न्यूगिनी से अलग करता है से न्यूगिनी के दक्षिणी भाग होते हुए जाने वाली रेखा को पूर्वी–सीमा निर्धारित किया है। हिन्द महासागर की उत्तर–पूर्वी सीमा इण्डोनेशियाई द्वीप

श्रृंखला से जावा तथा सुमात्रा होते हुए सिंगापुर जलडमरूमध्य के सहारे सिंगापुर तक जाती है। दक्षिणी ध्रुव पर विस्तृत अण्टार्कटिका महाद्वीप इस महासागर की दक्षिणी सीमा बनाता है। इसका अधिकांश भाग दक्षिणी गोलार्द्ध में है तथा उष्ण और उष्ण शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित होने के कारण यह वर्ष पर्यन्त आवागमन हेतु उपयुक्त रहता है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7.8 करोड़ वर्ग किमी है। हिन्द महासागर में पश्चिम–उत्तर–पूर्व मोजाम्बिक जलमार्ग, लालसागर अदन की खाड़ी, फारस की खाड़ी, ओमान की खाड़ी, अरब सागर, लक्षद्वीप सागर, बंगाल की खाड़ी, अण्डमान सागर, सिंगापुर जलडमरूमध्य, साबू सागर, तिमोर सागर, आराफुरा सागर, कारपेट्रिया की खाड़ी तथा टोर्स जलडमरूमध्य है। दक्षिणी पूर्वी हिन्द महासागर में एक्समाऊथ खाड़ी, ग्रेट आस्ट्रेलियाई बाइट, स्पेंसर खाड़ी तथा बास जलडमरूमध्य स्थित है।

हिन्द महासागर में कुल 47 द्वीप पाये जाते है। हिन्द महासागर के द्वीपों को पूर्वी, पश्चिमी तथा दक्षिणी प्रदेशों में उनकी स्थिति के अनुसार विभाजित किया गया है। प्रदेशानुसार वितरण देखा जाए तो 17 पूर्वी तथा 24 पश्चिमी हिन्द महासागर में और 6 दक्षिणी हिन्द महासागर में स्थित है। राष्ट्रीय सम्बद्धता के अनुसार भारत के अन्तर्गत 3, मलेशिया के 2, इण्डोनेशिया के 4, थाइलैण्ड के 2, म्यामार के 1, यमन के 1, केनिया के 1, तन्जानियां के 3, मोजाम्बिक के 2, मारीशस के 3, दक्षिण अफ्रीका के 1, आस्ट्रेलिया के 6, फ्रांस के 11, ब्रिटेन का 1 तथा स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में 6 द्वीप आते है।

भारत की भौगोलिक स्थिति :–

भारत अर्थात इण्डिया (India) दक्षिण एशियाई परिमण्डल का एक वृहद भूखण्ड है। उत्तर में हिमालय पर्वत मालाओं तथा दक्षिण में हिन्द महासागर, दक्षिण पश्चिम में हिन्द अरबसागर एवं दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी से घिरा यह भूभाग अतिप्राचीन काल से ही एक सुस्पष्ट भौगोलिक एवं भू–राजनीतिक इकाई रहा है। वर्तमान में भारत की आकृति चतुष्कोणीय है जो केवल दक्षिणी भागों को छोड़कर अन्य सभी की ओर से प्रकृति द्वारा इतनी अच्छी तरह परिसीमित है जितना सम्भवतः विश्व का कोई अन्य देश नहीं। यूनान काल के महान भूगोलवेत्ता स्ट्रैबो (Strabo) ने भारत की आकृति पतंग जैसी बताई है। पाश्चात्य विद्वानों ने भारत को उपमहाद्वीप की संज्ञा दी है क्योंकि भारत अपनी विशालता एवं विविधता से स्वयं एक महाद्वीप दिखता है।

सम्प्रति उत्तर–पूर्वी गोलार्द्ध में भारत 8°4′ उत्तर से 37°6′ उत्तरी अक्षांश तथा 68°7′ पूर्व से 97°25′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। भारतीय मुख्य भूमि से दूर बंगाल खाड़ी में स्थित केन्द्रशासित प्रदेश अण्डमान निकोबार द्वीप समूह 6°4′ उत्तरी अक्षांश से 14° उत्तरी अक्षांश तथा 92° पूर्वी देशान्तर से 94° पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। भारत का दक्षिणतम् बिन्दु (पिगमेलियन प्वाइंट अथवा पारसन प्वाइंट) ग्रेट निकोबार द्वीप में स्थित है जो विषुवत रेखा से 876 किमी दूर है। भारत का उत्तरतम् बिन्दु इन्दिरा कॉल जम्मू कश्मीर में, पश्चिमोत्तर बिन्दु गौरमोता गुजरात में एवं पूर्वोत्तर बिन्दु किबिथू अरूणांचल प्रदेश राज्य में स्थित है। भारत का दक्षिणतम बिन्दु भारतीय मुख्य भूमि के दक्षिणतम बिन्दु से लगभग 2° अक्षांशीय अन्तराल पर है। इस तरह भारत का दक्षिणतम् अक्षांशीय विस्तार 6°4′ उत्तर से प्रारम्भ होता है। भारतीय मुख्य भूमि से लगभग 280 से 480 किमी दूर अरबसागर में अवस्थित लक्षद्वीप समूह 8° उत्तरी अक्षांश से 12°3′ उत्तरी अक्षांश तथा 71° पूर्वी देशान्तर से 74° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। र्कक रेखा (23°30′ उत्तरी अक्षांश) भारत के लगभग मध्य से होकर (राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प0 बंगाल, त्रिपुरा एवं मिजोरम कुल 8 राज्यों से) गुजरती है। भारत की समय मानक रेखा (82°30′ पूर्वी देशान्तर) भारत के पाँच राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िसा तथा आन्ध्र प्रदेश से होकर गुजरती है।

भारत की विशालता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इसका विस्तार पूर्व–पश्चिम में 2,933 किलोमीटर और उत्तर–दक्षिण में 3,214 किलोमीटर है। इसकी स्थलीय सीमा 15,200 किलोमीटर और समुद्री सीमा 7,516.6 किलोमीटर (लक्षद्वीप, अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों सहित) है, परन्तु मुख्य भूमि से तटीय भूमि की लम्बाई 6100 किमी0 है। इसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है। भारत की स्थल सीमा पर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश है, जिसके साथ भारत की सीमा की लम्बाई क्रमशः 3,310 किमी0, 80 किमी0, 3,917 किमी0,

1,752 किमी0, 587 किमी0, 1,458 किमी0 एवं 4,096 किमी0 है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवां बड़ा देश है। अन्य 6 बड़े देश क्रमशः रूस, कनाडा, ब्राजील, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया और चीन हैं। दूसरे शब्दों में, कहा जा सकता है कि ब्रिटेन से 12 गुना व जापान से 8 गुना बड़ा तथा कनाडा का एक–तिहाई और चीन का भी एक–तिहाई है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार यहां की जनसंख्या 121.02 करोड़ है। भारत का क्षेत्रफल सम्पूर्ण विश्व के क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत है, जबकि इसकी जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से यह चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है।

भारत की उत्तरी सीमाएँ हिमालय पर्वत श्रेणियों द्वारा निर्मित हैं। केवल प्राकृतिक दर्रों के द्वारा ही भारत का सम्पर्क अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, चीन के सिंक्यांग एवं तिब्बत से हो पाता है। सामरिक दृष्टि से यह अति महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ एशिया के पाँच देशों (भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तकाजिस्तान एवं चीन) की सीमाएँ परस्पर मिलती हैं। भारत की समूची उत्तरी सीमा के सहारे तिब्बत का पठार विस्तृत है। यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से आज तिब्बत चीन का भाग है किन्तु प्राचीन काल से ही भारत के साथ इसके गहरे सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्बन्ध रहे हैं। तिब्बत के दक्षिण में स्थित नेपाल भारत एवं चीन के मध्य एक स्थलबद्ध (Land locked) उभयरोधी राज्य (Buffer tate) के रूप में स्थित है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक तौर पर इसका भारत के साथ निकट का सम्बन्ध रहा है। पूर्व में स्थित भूटान का लघु राज्य (Kingdom) स्थित है जो एक विशिष्ट सन्धि द्वारा भारत से सम्बद्ध है।

भारत की म्यामार के साथ पूर्वी सीमा हिमालय की प्रशाखाओं के सहारे पायी जाती है। इसका निर्माण मिशिमी, पटकोई एवं नागा पहाड़ियों, बरैल श्रेणी, लुशाई पहाड़ियों तथा अराकानयोमा द्वारा किया जाता है। सघन वनाच्छादन के कारण यह क्षेत्र अभिद्रोहियों तथा अपराधियों के लिए उपयुक्त है। पाकिस्तान के सहारे लगने वाली भारत की पश्चिमी सीमा एक अध्यारोपित कृत्रिम सीमा है जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक तौर पर एक समूह तथा कुल के लोगो को पृथक् करती है। इस सीमा का निर्धारण धर्म के आधार पर (हिन्दू एवं मुस्लिम जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर) किया गया था। यह सीमा कच्छ के दलदली क्षेत्र से प्रारम्भ होकर राजस्थान के मरूक्षेत्र तथा पंजाब के उर्वर मैदानी क्षेत्र से गुजरती हुई उत्तर में हिमालय पर्वतमालाओं का स्पर्श करती है। कश्मीर का प्रश्न भारत एवं पास्किातन के मध्य विवाद एवं कटुता उत्पन्न करता है। भारत–बाँग्लादेश सीमा एक कृत्रिम सीमा है जिसके सहारे उभय देशों के अनेक विदेशी अन्तःक्षेत्र (enclave) स्थित है। इस सीमा के सहारे अधिकांश विवादों को सौहाद्रपूर्ण ढंग से सुलझा लिया गया है। तथापि बड़ी संख्या में बाँग्लादेशी घुसपैठिये भारत में प्रवेश कर उत्तर–पूर्वी राज्यों में तनाव, तस्करी एवं आन्तरिक सुरक्षा सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न करते है। भारत ने इस क्षेत्र में अवैध घुसपैठ एवं तस्करी रोकने हेतु सीमा के सहारे कँटीले तार लगाना प्रारम्भ किया है।

राज्यों का संघ भारत सम्पूर्ण सम्प्रभुता सम्पन्न समाजवादी धर्म निरपेक्षण लोकतान्त्रिक गणराज्य है जिसमें संसदीय प्रणाली की सरकार है। भारत में कुल 28 राज्य एवं 7 केन्द्रशासित प्रदेश है। भारत में जातियों, धर्मों, रीति–रिवाजों तथा खान–पान में भिन्नता के बावजूद एक सर्वव्यापी एकता के दर्शन होते है।

भारत एवं हिन्द महासागर की भौगोलिक स्थिति का महत्व :–

स्थलीय क्षेत्रों के विपरीत जल क्षेत्र मनुष्य के लिए प्राचीन काल से ही निर्बाध गमनागमन के क्षेत्र रहे है। धरातल पर राज्यों की प्रभुसत्ता के अस्तित्व में आने के पूर्व सभी समुद्र आवागमन के लिए स्वतंत्र थे, लेकिन जैसे–जैसे राज्य इकाई का कार्यात्मक विकास होता गया और उनकी सीमाएं रेखीय रूप में आकर उर्ध्वाधर तल बन गयी, तभी से समुद्र तटवर्ती राज्यों की समुद्री सीमा भी निश्चित होती गयी। विभिन्न तकनीकों के अविष्कार के परिणामस्वरूप समुद्री क्षेत्र केवल अथाह जल क्षेत्र न होकर खनिज, शक्ति और अनेक जैव संसाधनों के सम्भाव्य विकास का क्षेत्र होता गया। इस सन्दर्भ में सभी समुद्र तटवर्ती देशों की निश्चित समुद्री सीमा के अतिरिक्त समुद्री अनुसंधान में अग्रणी देशों को विस्तृत समुद्री क्षेत्र का विशेष आर्थिक क्षेत्र भी प्रदान किया गया। इससे उन देशों के लिए सागरीय अनुसंधान और विभिन्न संसाधनों के शोषण का अधिकार निर्धारित हो गया। तभी से समुद्रतटवर्ती देशों के लिए महासागरों का महत्व आर्थिक–व्यापारिक और राजनीति की दृष्टि से बढ़ गया है।

हिन्द महासागरीय परिमण्डल के राष्ट्रों में परस्पर बहुत से ऐतिहासिक सम्बन्ध जो कभी–कभी काफी अस्पष्ट तथा असम्बद्ध भी है, पाये जाते है। इनमें एशिया, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया में आर्थिक संयोजन, सांस्कृतिक विनिमय तथा मानव का आवागमन भी सम्मिलित है। प्राचीन काल से लेकर अब तक हिन्द महासागर का उत्तरी भाग सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है। उत्तर–पूर्वी भाग में दक्षिण–पूर्वी एशिया निकटवर्ती चीन और सीधे उत्तर में भारत, बाँग्लादेश, पाकिस्तान, उत्तर–पश्चिम में इरान, इराक, सऊदी अरब, यमन ओमान और पश्चिम में उत्तर–पूर्वी अफ्रीका के इथोपिया, सोमालियां, केन्या, तन्जानियां, मोजाम्बिक और दक्षिणी अफ्रीका संघ पूर्व में आस्ट्रेलिया से आवृत्त यह महासागर एक झील के रूप में है। इस तरह मकर रेखा के उत्तर में यह लगभग एक बन्द महासागर के रूप में है। हिन्द महासागर के तटवर्ती देशों में सर्वाधिक उपर्युक्त भौगोलिक स्थिति भारत की है। इसलिए हिन्द महासागरीय क्षेत्र में भारत सर्वाधिक भू–राजनीतिक महत्व का राष्ट्र है। सम्प्रति हिन्द महासागरीय क्षेत्र में भारत की भौगोलिक स्थिति का निम्नलिखित महत्व है।

1. आर्थिक महत्व :–

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हिन्द महासागर का अपने अगाध प्राकृतिक साधनों के कारण विशेष महत्व है। भौगोलिक दृष्टि से इनका वितरण असमान है। यहाँ दक्षिण एशिया या दक्षिण पूर्वी एशिया का खनिज संसाधन जैसे– पेट्रोलियम, यूरेनियम, हीरा, सोना, चाँदी, टिन, टंगस्टन, लेड, जिंक, ताँबा व बहुमूल्य पत्थरों के भण्डार हो या दक्षिण–पश्चिम एशिया का खनिज तेल या मोजाम्बिक का कृषि उत्पादन कपास, चीनी, काजू, नारियल, सीसल व चाय या ब्रेड बास्केट इथियोपिया या सुडान मिश्र का कपास या मलेशिया तथा इण्डोनेशिया का रबर उत्पादन विश्व शक्तियों के लिए ये सभी महत्व के है तथा इनके लिए भविष्य में इस क्षेत्र में संघर्ष अवश्यंभावी दिखता है। विश्व का 90 प्रतिशत रबर, 90 प्रतिशत टिन, 76 प्रतिशत सोना, 16 प्रतिशत लोहा, 80 प्रतिशत मैंगनीज, 98 प्रतिशत हीरा, 60 प्रतिशत यूरेनियम तथा विश्व के कुल तेल रिजर्व का 50 प्रतिशत भण्डार इस क्षेत्र में है। इसके व्यापारिक मार्ग पश्चिम एवं पूर्व के लिए जीवन रेखाएं है जिनमें अवरोध आने या बन्द होने से उनके अस्तित्व के लिए खतरा हो सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका यहाँ से अपनी आवश्यकता का लगभग 40 प्रकार के खनिज संसाधनों की आपूर्ति करता है। जापान अपनी लगभग 90 प्रतिशत से ऊपर के खनिज तेल की आपूर्ति फारस के खाड़ी से करता है।

विश्व की कुल बोयी गयी भूमि का 20 प्रतिशत हिन्द महासागरीय क्षेत्र में स्थित है जिसमें गेहूँ, चावल, गन्ना, कपास, चाय, कहवा, जूट तथा रबर का उत्पादन काफी अधिक मात्रा में होता है। यहाँ पर मत्स्योत्पादन की स्थिति स्थानीय पकड़ की है। यहाँ अच्छी कोटि की खाने योग्य मछलियों की कमी नहीं है परन्तु शीतोष्ण देशों के तटवर्ती सागर से ही पश्चिमी देशों की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। इस क्षेत्र में धीरे–धीरे मत्स्य उत्पादन में वृद्धि की जा रही है। हिन्द महासागरीय क्षेत्र में 15 प्रमुख तटवर्ती राष्ट्र मत्स्योंत्पादन में लगातार वृद्धि कर रहे है। भारत भी इससे अछूता नहीं है।

हिन्द महासागर के भारतीय खनिज स्रोत :–

हिन्द महासागर में अनेक खनिज उसकी बेसिन की तली में संग्रथित जमावों में पाए जाते है। अभी तक के किए गए अनुसंन्धानों से पता चला है कि इस महासागर में मैंगनीज के ढेले, मोनोजाइट, तांबा, गारनेट, मैग्नेसाइट, बैरियम के सान्द्र, फॉस्फोरिक सान्द्र, सोडियम क्लोराइड, नमक, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और गन्धक के पर्याप्त भण्डार उपलब्ध है। लगभग 25 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में महाद्वीपीय ढाल व बेसिन वाले क्षेत्रों में खनिजों का वितरण मिलता है।

भारत द्वारा समुद्री अनुसंधान में विकास कर लेने के कारण उसे विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र प्रदान किया गया है। इसके बाहर अन्तर्राष्ट्रीय समुद्रतलीय प्राधिकरण ने डियेगो गार्सिया के पास 1.50 लाख वर्ग किमी का क्षेत्र भारत को सर्वेक्षण और विकास हेतु दिया गया है। इसका आधा भाग भारत अपने पास रखेगा तथा उससे खनिजो और जैव खाद्य पदार्थो का शोषण भी कर सकेगा। यहाँ पर बहुधात्विक खनिज पिण्डों के पाये जाने की सम्भावना है। इस प्रकार के खनिज और बहुधात्विक पिण्ड बंगाल की खाड़ी और पश्चिमी तट के सहारे अरब सागर में मिलने की पुष्टि हुई है। सर्वेक्षण के अनुमानों के

अनुसार सम्पूर्ण हिन्द महासागर में 1 करोड़ वर्ग किमी क्षेत्र में मैंगनीज पिण्डो के मिलने की सम्भावनाएं है।

महासागर की तली की चट्टानों से प्राप्त पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस एवं गन्धक खंभात की खाड़ी के निकट, अरब सागर में तथा ऐलीबेट द्वीप, मुम्बई हाई, बेसीन और मुम्बई के दक्षिण–पश्चिम में तथा बंगाल–ओडिशा के तटीय भागों में पेट्रोलियम की प्राप्ति हुई है। दक्षिण कोंकन और लक्षद्वीप में भी तेल मिलने की सम्भावना है। कावेरी एवं गोदावरी बेसिन में भारी दबाव से खनिज तेल व प्राकृतिक गैस के भण्डार दलदली भागों में मिले है। इनका अब विशेष विधि से विदोहन किया जा रहा है। तट के निकट पायी जाने वाली बालू मिट्टी में मोनोजाइट, इल्मैनाइट (केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, ओडिशा के तटीय भागों में) की प्राप्ति होती है। इन क्षेत्रों से प्राप्त कंकड़ और बालू पत्थर का उपयोग निर्माण कार्यों के लिए किया जा सकता है। महासागरीय जमावों के अन्तर्गत सागरीय जीवों के अवशेषों के रूप में शैल, मूंगा, मोती, मुक्तासुक्ति, आदि पाए जाते है। उत्तरी अण्डमान द्वीपों के भागों में बेरियम, तांबे के सान्द्र जमाव और फास्फेट के भण्डार पाये जाते है। यहां खनिज तेल के सम्भावित क्षेत्र भी पाए गए है। महासागर के अनेक भागों में लगभग 1 करोड़ वर्ग किमी क्षेत्र में मैंगनीज, तांबा, कोबाल्ट की प्राप्ति की सम्भावनाएं है। पाक जल विभाजक मुहाना और मनार की खाड़ी में मोती देने वाली मछलियां तथा समुद्री तटों पर नमक की प्राप्ति होती है।

2. व्यापारिक महत्व :–

दो बड़े महासागरों अटलाण्टिक एवं प्रशान्त के मध्य हिन्द महासागरीय मार्ग जापान, यूरोप एवं अमेरिका की अर्थव्यवस्था के लिए रक्तवाहिनी नाड़ियों का कार्य सम्पन्न करता है। अटलाण्टिक और प्रशान्त के मध्य पहले केप तत्पश्चात स्वेज नहर खुलने के बाद भूमध्य सागर द्वारा समुद्री परिवहन में हिन्द महासागर की भूमिका बढ़ी है। यहां के सागरीय मार्गों से पश्चिमी अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण प्रति वर्ष लगभग 30000 जलयान जिसमें लगभग 1500 टैंकर होते है। हिन्द महासागर स्थित स्वेज नहर बाब एल मैन्डेब जलडमरूमध्य, केप आफ गुड होप तथा मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरते है। औसतन हार्मुज जलडमरूमध्य से प्रति घण्टे 2 टैंकर मोजाम्बिक तथा मेडागास्कर–चैनलों से 40 जलयान प्रतिदिन तथा इतना ही मलक्का जलडमरूमध्य से आते–जाते है। अब तक हिन्द महासागरीय राज्यों का सम्पूर्ण व्यापार पश्चिमी यूरोप के साथ 33 प्रतिशत, जापान के साथ 19 प्रतिशत, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ 13 प्रतिशत तथा पूर्वी एशिया के देशों से 5 प्रतिशत था।

पूर्वी गोलार्द्ध में भारत की अवस्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्द महासागर के उत्तरी सिरे पर यह देश इस प्रकार स्थित है कि यह पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य में पड़ता है। यूरोप और अमेरिका के पश्चिमी भागों से भारत लगभग समान दूरी पर स्थित है। कोलकाता से सिंगापुर होकर हांगकांग और याकोहामा पहुंचने में समुद्री मार्ग सें लगभग 8 दिन लग जाते है। इसी प्रकार मुम्बई से अदन और स्वेज नहर होते हुए यूरोपीय देशों को पहुंचने में भी लगभग उतना ही समय लगता है। कोलकाता से उत्तरी अमेरिका का पश्चिमी तट उतना ही दूर पड़ता है जितना मुम्बई से उसका पूर्वी तट। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय वायु मार्ग एवं सामुद्रिक मार्ग इसकी सीमा से या इसके तट के निकट से होकर निकलते है। इस प्रकार पूर्वी देशों से पश्चिमी और पश्चिमी देशों से सुदूरपूर्व की ओर जाने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग भारत से होकर निकलते है। भारत से पूर्व और दक्षिण–पूर्व की ओर ये मार्ग चीन व जापान को, पश्चिम और दक्षिण–पश्चिम में ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य, लैटिन अमेरिका के देशों और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका को, और दक्षिण में श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया, इण्डोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड को जाते है। स्वेज नहर के बन जाने के बाद भारत की स्थिति का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है क्योंकि इसके द्वारा पश्चिमी यूरोपीय देशों और भारत के पश्चिमी तटीय बन्दरगाहों के बीच लगभग 4800 किमी दूरी कम हो गयी है। स्वेज नहर और पूर्व में मलक्का जल संयोजक के आरम्भ होने या उनमें से निकलने वाले सभी जलयान भारत से होकर निकलते है। इससे भारत की दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय महत्ता स्पष्टतः प्रतिष्ठित हो जाती है। इस प्रकार भारत पश्चिमी औद्योगिक देशों को एवं वहां से पूर्व के विकासशील देशों के मिलाने के लिए एक श्रृंखला का कार्य करता है। भारत को दोनों प्रकार के देशों से निर्मित एवं कच्चे माल का आयात तथा निर्यात करने में पूरी–पूरी सुविधा रहती है।

अपनी ऐसी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण ही अतीतकाल से ही भारत का सम्पर्क तत्कालीन सम्पूर्ण सभ्य विश्व से था। उस समय प्रमुख व्यापारिक स्थल मार्गों का केन्द्र भारत ही था। पूर्व की ओर चीन, जापान, थाईलैण्ड, कम्बोडिया (कम्बोज), सुमात्रा (सुवर्ण रूप्यका), जावा (यव), बाली, आदि देशों तक तथा पश्चिम की ओर अरब, फारस, मिस्र, यूनान और रोम तक भारतीय व्यापारियों के जहाज विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य वस्तुएं (गरम मसाले, मोती, हीरा, जवाहरात, सोना, रेशमी और सूती वस्त्र, खाण्ड व कलात्मक वस्तुएं, आदि) ले जाया करते थे। दक्षिण भारत के चोल, पांड्य, पल्लव, आदि राज्यों ने तो पूर्वी देशों में उपनिवेश तक स्थापित किये थे, जहां भारतीय संस्कृति के चिन्ह आज भी उपलब्ध होते है। भारत से ही बौद्ध धर्म दक्षिण–पूर्वी एवं पूर्वी एशिया में तेजी से फैला है।

वायुमार्गों की दृष्टि से भी भारत की स्थिति उत्तम कही जा सकती है। पश्चिमी देशों से सुदूरपूर्व (चीन, जापान, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया) को जाने वाले वायुयान भारत से होकर ही निकलते है। दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता आदि अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हवाई अड्डे है जहां पर ठहरकर वायुयान ईंधन एवं यात्री लेते है तथा यहां आपातकालीन मरम्मत भी करायी जा सकती है। हिन्द महासागर के तट पर जितने भी देश अवस्थित है, उनमें भारत की तटीय सीमा हिन्द महासागर के साथ सर्वाधिक लम्बी है।

भू–राजनीतिक महत्व :–

हिन्द महासागर के विशेष सन्दर्भ में भारत की अवस्थिति के राजनीतिक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत का विश्व भू–राजनीति में महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय अर्थतन्त्र ने हिन्द महासागरीय क्षेत्र की राजनीति और भू–रणनीति को प्राचीन काल से लेकर आज तक क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावित किया है। इसी तरह हिन्द महासागर का विश्व की भू–राजनीति में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है। संभवतः इसी तथ्य को ध्यान में रखकर पनिक्कर ने माना था कि जो शक्ति हिन्द महासागर पर नियन्त्रण कर लेगी वही भारत की भाग्य विधाता बन जायेगी।

द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व हिन्द महासागर के तटवर्ती राष्ट्र यूरोपीय देशों के उपनिवेश थे। स्वतंत्रता के बाद इनकी आर्थिक दशा सोचनीय हो गयी। आर्थिक रूप से ये राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों की कृपा पर निर्भर थ। बड़े राष्ट्रों के आर्थिक चंगुल से निकलने के लिए इन राष्ट्रो ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनायी। लेकिन महाशक्तियाँ निरन्तर इनके ऊपर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करती रहीं। जबकि नवोदित राष्ट्रों की मान्यता थी कि किसी एक महाशक्ति के साथ न जुड़कर दोनों से समान दूरी बनाये रखते हुए जब जैसी आवश्यकता होगी निरन्तर सहयोग प्राप्त करते रहेंगे। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की यह मान्यता थी कि इसी नीति पर चल कर हम दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा कर सकते है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र विदेशी नीति के माध्यम से अपने हितों की सुरक्षा कर सकते है। लेकिन महाशक्तियों की यह इच्छा थी कि वे राजनीतिक रूप से इन नवोदित राष्ट्रों को अपने अपने प्रभाव में बनाए रखे। इसके कारण भी इस क्षेत्र में बड़ी महाशक्तियाँ निरन्तर प्रतिद्वन्दिता करती रही है।

वर्ष 1991 में सोवियत रूस के विखण्डन के पश्चात् सम्पूर्ण विश्व का भू–राजनीतिक परिदृश्य बदल गया है। फिर भी संयुक्त राज्य अमेरिका ने भूमण्डलीय स्तर पर स्थापित अपने आर्थिक और सैन्य संगठनों को बन्द नहीं किया है। इसका कारण विश्व में एक ध्रुवीय शक्ति का विकास और पूंजीवादी मॉडल को विजय के रूप में खोजा गया। परिवर्तित राजनीतिक भौगोलिक परिस्थिति में भारत की क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नीतियाँ भी प्रभावित होने लगी है। भारत ने हिन्द महासागर विकसित अपने द्वीपों को व्यापारिक और सैन्य आधार केन्द्र के रूप में विकसित करना प्रारम्भ किया है। यू0एस0ए0 और सोवियत रूस से अलग हटकर भारत ने इरान और इण्डोनेशिया के साथ मिलकर हिन्द महासागर क्षेत्र की अवधारणा विकसित किया है। प्रतिस्पर्धी व्यापारिक संगठनों की तर्ज पर दक्षिण एशिया सहयोग संगठन (SAARC) का गठन किया गया। भारत के लिए विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (SEZ) मिलने के बाद उसने अपने अपतटीय क्षेत्र से विभिन्न समुद्रीय संसाधनों का शोषण प्रारम्भ कर दिया है। यूरोप और पूर्वी एशिया से होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने हेतु भारत ने समुद्रीय जहाजी बेड़े का विकास किया है।

3. सामरिक महत्व :–

सामरिक दृष्टिकोण से हिन्द महासागर की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारतीय नौ सैनिक कमाण्डर वी0 ए0 के कामथ के अनुसार 'जो सागर पर नियन्त्रण स्थापित करेगा, शीघ्र ही स्थल पर नियन्त्रण स्थापित करेगा। सागर के महत्व को परिलक्षित करता है। वर्तमान समय में सामरिक दृष्टिकोण से नौ सेना की महत्वपूर्ण भूमिका है इसमें सुरक्षा के तीन आयाम तटरक्षक, जल एवं वायु क्षेत्रक सम्मिलित है। इसलिए हिन्द महासागर सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पन्निकर ने कहा कि ''भारत की सुरक्षा हिन्द महासागर पर निर्भर है और उसकी स्वतंत्रता की रक्षा सामुद्रिक क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापना पर निर्भर करती है।'' हिन्द महासागर विश्व का ऐसा महासागर है जहाँ से दक्षिणी गोलार्द्ध के सभी राष्ट्रों की सैनिक गतिविधियों पर नजर एवं नियंत्रण रखा जा सकता है। अन्तर महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों के अविष्कार के कारण रूस के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग पर अफ्रीका, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया तथा दक्षिण एशिया के राष्ट्रों को युद्ध के समय असानी से निशाना बनाया जा सकता है। हिन्द महासागर में सर्वाधिक द्वीप एवं महाद्वीप है। हिन्द महासागर के प्रमुख द्वीपों अण्डमान, मेडागास्कर, मारीशस, सेशेल्स, श्रीलंका, सुमात्रा एवं जावा आदि द्वीपों पर नियंत्रण स्थापित करके सम्पूर्ण तटीय प्रदेशों तथा विश्व व्यापार को अवरूद्ध किया जा सकता है। इन्हीं कारणों से विश्व की बड़ी शक्तियाँ हिन्द महासागर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का निरन्तर प्रयास करती रही है। शीत युद्ध के समय हिन्द महासागर में दोनों शक्तियों में प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष की सम्भावना प्रबल हो गयी है। इस क्षेत्र में रूस और चीन भी अपना प्रभुत्व स्थापित करने में कोई कसर नही छोड़ रहे है।

भारत भी अपने तत्कालिक एवं दीघकालिक हितों की सुरक्षा के लिए अपनी नौशक्ति का निरन्तर विस्तार कर रहा है। भारत के पश्चिमी तट पर मुम्बई, गोवा, कोचीन तथा पूर्वी तट पर विशाखापट्टनम्, तूतीकोरन, पोर्टब्लेयर व निकोबार द्वीप पर अपने नौ सैनिक अड्डे स्थापित किये है। सम्प्रति भारतीय नौसेना किसी से पीछे नहीं है। नियंत्रण के कारणों से देरी के बावजूद विमानवाहक पोत विक्रमादित्य भारत पहुँच चुका है। इसके साथ ही भारत की नौसेना एशिया में ऐसी पहली सेना बन गयी है, जिसके पास दो विमानवाहक पोत है। इसी बीच वर्ष 2013 में भारत ने अपना पहला देशी विमानवाहक पोत आई0 एन0 एस0 विक्रान्त कोच्चि के बन्दरगाह में उतार दिंया था। नौसेना में अकुला क्लास की आई0 एन0 एस0 चक्र शामिल होने से भारत विश्व का छठां देश बन गया है जिसके पास परमाणु चालित पनडुब्बी है। इस बीच देश की पहली देशी परमाणु चालित पनडुब्बी आई0 एन0 एस0 अरिहन्त भी जल्द ही समुद्र में परीक्षण के लिए उतरने जा रही है। परमाणु चालित इस पनडुब्बी में परमाणु बैलेस्टिक मिसाईलें लगायी जायेगी। जैसे ही आई0 एन0 एस0 सेवा में आ जायेगा भारत की परमाणु त्रयी पूरी हो जायेगी। परिणामस्वरूप भारत पर परमाणु हमले की स्थिति में जबाबी परमाणु हमला करने की क्षमता बढ़ जायेगी। भारत के पास आधुनिक जंगी जहाज गोदावरी व गंगा है, जिनका निर्माण स्वदेश में किया गया है। समुद्री खोज कार्य हेतु गवेषणी व सागर कन्या नामक जहाज भी है। भारत अपनी नौ सेना को अत्याधुनिक बनाने के लिए निरन्तर सक्रिय है। सरदार पटेल के शब्दों में ''भारत की भौगोलिक स्थिति एवं आकृति जलयान निर्माण उद्योग एवं उसकी लम्बी समुद्र तट की सुरक्षा हेतु एक शक्तिशाली नौ सेना को विकसित करने के लिए बाध्य करता है। एक व्यावहारिक जहाज रानी उद्यम के विकास के लिए बिना श्रेष्ठ कोटि की नौ सेना का होना असम्भव है।

समस्याएँ एवं सुझाव :–

भारत विश्व का एक विकासशील राज्य है। भाषा, धर्म, प्रजाति, रहन–सहन, परम्पराओं आदि की विविधता व पड़ोसियों के कुस्वार्थों के कारण यह अनेक भू–राजनीतिक समस्याओं से ग्रस्त है। इसकी प्रमुख क्षेत्रीय समस्याएं पंजाब समस्या, कश्मीर समस्या, असम समस्या, झारखण्ड समस्या आदि से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त पड़ोसी देशों पाकिस्तान व चीन से द्विपक्षीय सम्बन्धों और इससे लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के विवाद से सम्बन्धित समस्याएं तथा भारत, बांग्लादेश सीमा समस्याएं आदि अनेक समस्याओं ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अखण्ड भारत को प्रभावित किया है। भारतीय संस्कृत के रूप ''विविधता में एकता'' को देखकर समूचा विश्व दंग रहता है किन्तु आज स्थिति बदलती जा रही है। भारत की राष्ट्रीय अखण्डता पर दिन–प्रतिदिन प्रश्नवाचक चिह्न लगता जा रहा है। देश में इस सीमा

तक पृथकवादी एवं संकीर्णवादी शक्तियाँ जोर पकड़ती जा रही है जो न केवल देश की राजनीतिक अखण्डता के लिए खतरा है, बल्कि विविध क्षेत्रीय प्रगति तथा आर्थिक वैज्ञानिक तकनीकि एवं शैक्षिक सभी के समुचित विकास में भाँति–भाँति की बाधाएं उत्पन्न हो गयी है। आज ऐसी ही समस्याओं के कारण देश संकीर्णता के भवर जाल में उलझता जा रहा है। दूसरी तरफ भारत को हिन्द महासागर के तटवर्ती राष्ट्रों के संघर्ष, ईर्ष्याभाव, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की दयनीय अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एवं महाशक्ति के संकीर्ण स्वभाव से अपने हितों की सुरक्षा का भी प्रश्न उठता जा रहा है। भारत की भौगोलिक स्थिति इस प्रकार की है जिससे वह अपने विकास एवं सुरक्षा के लिए हिन्द महासागर पर निर्भर करता है। इक्कीसवीं सदी में यदि अमेरिका, चीन व रूस आदि हिन्द महासागर में सैनिक एवं आर्थिक रूप में और ज्यादा शक्तिशाली हुए तो वह भारतीय तटों द्वीपों एवं अन्य महासागरीय तटवर्ती राष्ट्रों के लिए चुनौती प्रस्तुत कर सकते है। केवल भारत के पास यह क्षमता है कि वह भविष्य में हिन्द महासागरीय द्वीपों की सुरक्षा एवं सहायता कर सकता है। अतः भारत को हिन्द महासागरीय क्षेत्र में एक ऐसी महाशक्ति बनने की आवश्यकता है जो तटवर्ती राष्ट्रों की हितों की सुरक्षा के साथ अपने तत्कालिक एवं दीर्घकालीन आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक, भू–राजनीतिक एवं सामरिक हितों की सुरक्षा कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. चौहान, पी0 आर0 एवं प्रसाद, महातम, 2009 : *भारत का वृहद भूगोल*, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर पृ0 772–783।
2. दीक्षित, श्रीकान्त, 2006 : *राजनीतिक भूगोल एवं भू–राजनीति*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 196–200 एवं 203।
3. सिंह, तारा देवी, 2009 : *हिन्द महासागर एवं संलग्न राष्ट्र एक भू–आर्थिक एवं भू–सामरिक अध्ययन*, पृ0 1–3, 19, 130, एवं 269–274।
4. सिंह, रामकृष्ण एवं सिंह, राकेश, 2010 : *राष्ट्रीय सुरक्षा*, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 184–185।
5. मामोरिया, चतुर्भुज एवं मिश्रा, जे0 पी0, 2013 : *भारत का भूगोल*, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, पृ0 1–3 एवं 145।
6. चौहान, वी0 एस0 एवं गौतम, अलका, : *भारत*, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
7. सिंह, लल्लन जी, 2009 : *राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा*, प्रकाश बुक डिपो बरेली, पृ0 413।
8. *राष्ट्रीय एटलस*, 2013।
9. *भारत*, 2012, पृ0 1।
10. Panikkar, K. M., 1955 : *Geographical Introduction to Indian History*, Bombay, Bhawan's Book University.
11. *National Atlas of India*, 1957.